प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन

रोहिताश सिंह[1], डॉ. योगेश कुमार[2]

[1,2]शिक्षा–संकाय राजा हरपाल सिंह पी0 जी0 कॉलेज सिंगरामऊ, जौनपुर, उ०प्र०, इंडिया

Corresponding Author Email: rohitashsingh6259@gmail.com

सारांश–किसी भी व्यक्ति का व्यवहार उसके व्यक्तित्व का वास्तविक प्रदर्शन होता है, क्योंकि व्यक्ति के भीतर जिस प्रकार के विचार चल रहे होते हैं वे वैसे ही उसका शरीर गति अर्थात व्यवहार करता है। इसी प्रकार कुछ शिक्षक जो कक्षा में अपने पाठ वस्तुओं संबंधी विचारों एवं व्यवहारों का समायोजन बेहतर ढंग से कर पते है जबकि कुछ शिक्षकों के पाठ वस्तु संबंधी विचार अलग होते हैं और उनके व्यावहारिक प्रदर्शित अलग होता हैं। शिक्षकों के द्वारा कक्षा शिक्षण के समय किए जाने वाले व्यवहार के कारण विद्यार्थियों के सीखने पर विशेष प्रभाव पड़ता है। कोई भी विद्यार्थी विषय या किताबी ज्ञान से ज्यादा शिक्षक की अभिव्यक्ति एवं शिक्षक के व्यवहार से सीखता है। वैसे तो शिक्षक हमेशा प्रयास करते हैं कि उनके विचार विद्यार्थियों के जीवन को बेहतर बनाने में समर्थ हो परंतु अनेक शिक्षक विचारों से तो विद्यार्थियों को शिक्षित करने का प्रयास करते हैं लेकिन स्वयं के व्यवहार को संयोजित करने में असफल हो जाते हैं जो विद्यार्थियों के अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करता है।

I. प्रस्तावना

शिक्षक विभिन्न परिस्थितियों में तथा भिन्न–भिन्न सन्दर्भों में अनेक प्रकार की क्रियायें करता है। स्कूल तथा समाज के सन्दर्भों में भी अपना कर्तव्य निभाता है और उसके साथ ही साथ वह कक्षा – शिक्षण भी करता है। शिक्षक की वे सभी क्रियायें जो छात्रों के व्यवहार परिवर्तन में सहायक होती हैं, उन्हें शिक्षक व्यवहार कहा जाता है तथा जो क्रियायें वह कक्षा – शिक्षण के समय करता है उन्हे कक्षा – शिक्षण व्यवहार कहा जाता है।

फ्लैण्डर्स (1970) के अनुसार – 'शिक्षण व्यवहार शिक्षक के उस व्यवहार को कहते हैं जो कक्षा परिस्थिति में शिक्षक और छात्र के अन्तःक्रिया द्वारा घटित होता है।'

रेयन के अनुसार– 'शिक्षण व्यवहार उसे कहते है जो शिक्षक द्वारा छात्रों को सीखने के लिए दिशा–निर्देश के रुप में प्रदान किया जाता है।'

उपरोक्त परिभाषाओं से शिक्षक व्यवहार के सम्बन्ध में मुख्यतः दो आधारभूत धारणायें प्रतिपादित होती हैं।

1. शिक्षक व्यवहार सापेक्ष होता है।
2. शिक्षक व्यवहार एक सामाजिक प्रक्रिया है।

अतः शिक्षक व्यवहार वह है जो कक्षा–कक्ष की सामाजिक परिस्थिति के अन्तर्गत शिक्षक द्वारा प्रदर्शित किया जाता है और यह उस विशिष्ट सांस्कृतिक परिस्थिति के अनुकूल या सापेक्ष होता है। रेयान के अनुसार शिक्षण व्यवहार शिक्षक तथा उसके वातावरण से प्रारम्भ होता है और सामान्य स्तरों से होता हुआ विशिष्ट परिस्थितियों में अंद्वितीय व्यवहार स्तर तक पहुंचता है। प्रत्येक स्तर के व्यवहार में रेयान तीन कारकों को महत्व देते हैं।

1. शिक्षक की विशेषतायें
2. परिस्थिति
3. अन्तः क्रिया

कक्षा व्यवहार में शिक्षक के लिए शाब्दिक सम्प्रेषण नितान्त आवश्यक होता है। कक्षा में निर्देश कथन, व्याख्यान तथा प्रस्तुतीकरण, छात्रों की प्रशंसा आदि के लिए शिक्षक भाषा का ही प्रयोग करता है। इस प्रकार शिक्षक प्रमुख रूप में एक शाब्दिक व्यवहार होता है। यद्यपि शिक्षक की आँखे, हाव–भाव शारीरिक क्रियाएँ आदि अशाब्दिक व्यवहार हैं। परन्तु कक्षा निरीक्षकों के शोध प्रबंधों से निष्कर्ष निकाले गये हैं कि कक्षा–शिक्षण में शाब्दिक व्यवहारों की प्रधानता होती है और यह समस्त शिक्षक व्यवहार का सही प्रतिनिधित्व करता है। अतएव शाब्दिक व्यवहार के निरीक्षण से ही शिक्षक व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

कक्षा की सामाजिक परिस्थितियों में शिक्षक और छात्र के बीच परस्पर बात–चीत अथवा अन्तःक्रिया के परिणाम स्वरूप छात्र के व्यवहार में परिवर्तन एवं परिमार्जन होता है। इसी को हम प्रायः अधिगम की संज्ञा देते हैं। कक्षा के अन्दर अध्यापक छात्रों को सीखने के लिए दिशा प्रदान करता है। इस प्रकार शिक्षक का कक्षा – शिक्षण व्यवहार छात्र उपलब्धि को निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। अतः कक्षा में शिक्षक व्यवहार का अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय है।

II. सम्बन्धित साहित्य

झा एवं रस्तोगी (2018) ने *क्रिएटिव स्टाइल आफ टीचिंग आफ हिंदी मीडियम एंड इंग्लिश मीडियम स्कूल टीचर : अ कंपैरेटिव स्टडी* पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य अंग्रेजी माध्यम और हिंदी माध्यम के शिक्षकों के शिक्षण की रचनात्मकता के साथ–साथ शिक्षण शैलीयों के संबंध को जानना था। अध्ययन में न्यादर्श हेतु उत्तर प्रदेश राज्य के बरेली शहर के उत्तर प्रदेश बोर्ड के 260 हिंदी माध्यम और 260 अंग्रेजी माध्यम के शिक्षकों का उद्देश्यपूर्ण रूप से चयन किया गया। सर्वेक्षण विधि द्वारा प्रदत्त एकत्र कर निष्कर्षतः प्राप्त हुआ कि हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम के शिक्षकों की शिक्षण शैली में सार्थक संबंध पाया गया लेकिन हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम के शिक्षकों की रचनात्मकता में सार्थक संबंध नहीं पाया गया।

वसन एवं पी.के. (2019) ने *टीचिंग कॉम्पीटेन्स एंड टीचिंग स्टाइल ऑफ प्रायमरी स्कूल टीचर* पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य प्राइमरी स्कूल के शिक्षकों की शिक्षण शैली एवं शिक्षण दक्षता के बीच संबंध की जांच करना था। अध्ययन के लिए न्यादर्श हेतु केरला राज्य के शहर के 50 प्राइमरी शिक्षकों जिनमें 23 पुरुष तथा 27 महिला शिक्षकों को यादृच्छिक रूप से चयन किया गया। सर्वेक्षण विधि के प्रयोग द्वारा प्रदत्त एकत्र किए गये व निष्कर्ष से प्राप्त हुआ कि महिला एवं पुरुष शिक्षकों की शिक्षण शैली में सार्थक अंतर नहीं पाया गया व शिक्षकों के शिक्षण दक्षता तथा शिक्षण शैली के मध्य धनात्मक सार्थक संबंध पाया गया।

शेख एवं अन्य (2019) ने *इंपैक्ट आफ डिफरेंट टीचिंग स्टाइल ऑन स्टूडेंट मोटिवेशन टूवर्ड्स इंग्लिश लैंग्वेज लर्निंग एट सेकेंडरी लेवल* पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य अंग्रेजी भाषा के शिक्षकों की शिक्षण शैलियों की जांच करना था व अंग्रेजी भाषा के विद्यार्थियों की प्रेरणा स्तर पर शिक्षण शैलीयों के प्रभाव को देखना था। अध्ययन के लिए हैदराबाद जिले के 20 निजी माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी विषय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का यादृच्छिक रुप से चयन किया गया। अध्ययन हेतु स्वयं द्वारा निर्मित शिक्षण शैली व इंग्लिश लैंग्वेज मोटिवेशन स्किल तैयार कर, विद्यार्थियों व शिक्षकों द्वारा प्रश्नपत्र भरवा कर प्रदत्त एकत्र किए गये। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि अन्य शैलियों के अपेक्षा प्रत्यायोजक शिक्षण शैली ज्यादा प्रभावी पाई गई क्योंकि यह विद्यार्थी आधारित शिक्षण शैली है व विद्यार्थियों के प्रेरणा स्तर पर अधिक प्रभावी प्रभावित हुई।

चटर्जी एवं अन्य (2020) ने *लिंकिंग टीचिंग स्टाइल एंड लर्निंग स्टाइल एज अ मेजर ऑफ पर्सनल एनवायरमेंट फिट टू असेस स्टूडेंट्स परफारमेंस* पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य आज के संदर्भ में शिक्षकों और विद्यार्थियों की निष्पत्ति को उनके शिक्षण शैली और अधिगम शैली को अनुभव अनुरूपता पर आलोचनात्मक परीक्षण करना था। अध्ययन हेतु भारत के 15 संस्थानों के 260 मैनेजमेंट के विद्यार्थियों का यादृच्छिक रूप से चयन कर प्रदत्त एकत्रित किये गये। अध्ययन हेतु गुणात्मक विधि का प्रयोग किया गया व निष्कर्ष प्राप्त कर देखा गया कि शिक्षण शैली और अधिगम शैली

में विद्यार्थियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। विषय की प्रकृति को सीखनेध्अधिगम करने में, व विद्यार्थी प्रदर्शन करने में, शिक्षक के शिक्षण शैली में भी विद्यार्थी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

अवस्थी (2022) ने *अ स्टडी आफ नीड टू चेंज इन टीचिंग स्टाइल* पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों की शिक्षण शैलियों में परिवर्तन की आवश्यकता पर जांच करना था। अध्ययन में न्यादर्श हेतु इंदौर के 5 कालेज के 20 शिक्षकों का यादृच्छित न्यादर्शन विधि द्वारा चयन किया गया। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था। अध्ययन के निष्कर्ष में देखा गया कि शिक्षक पारम्परिक शिक्षण शैली का प्रयोग अधिक करते हैं व उनमें सफल भी पाये गये। लेकिन शिक्षकों द्वारा प्रयोग की गई सबसे ज्यादा प्रगति शिक्षण शैली अधिक सफल शिक्षण शैली पाई गई।

III. समस्या कथन

"प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार का तुलनात्मक अध्यययन"

शोध में प्रयुक्त पदों की संक्रियात्मक परिभाषाः–

- **प्राथमिक स्तर :**

  प्रस्तुत शोध में प्राथमिक स्तर का तात्पर्य शिक्षा के उस स्तर से हैं जिसमे कक्षा 1 से लेकर कक्षा 8 तक की शिक्षा प्रदान की जाती है।

- **शिक्षण व्यवहार :**

  प्रस्तुत शोध में शिक्षण व्यवहार का तात्पर्य शिक्षक के उन व्यवहार या क्रियाओं से हैं जो वे हिन्दी विषय का शिक्षण करते समय करते हैं जिससे की विद्यार्थियों को हिन्दी विषय का ज्ञान आसानी से हो जाता है। अर्थात शिक्षकों द्वारा किया गया ऐसा व्यवहार जिसके द्वारा विद्यार्थियों निर्देश, प्रोत्साहन एवं अभिप्रेरणा की प्राप्ति होती है।

अध्ययन का उद्देश्यः–

1. प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरुष शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शून्य परिकल्पना :–

1. प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरुष शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

IV. शोध विधि

प्रस्तुत शोध में मुख्य रूप से वर्णनात्मक विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध की जनसंख्या :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद जौनपुर के अंतर्गत आने वाले समस्त प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत समस्त शिक्षकों को जनसंख्या के रूप में चुना गया है।

प्रतिदर्श एवं प्रतिर्शन विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या में साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि का प्रयोग करके समस्त प्राथमिक विद्यालयों से 200 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चुना गया है।

V. शोध के उपकरण

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार का मापन करने के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित हिन्दी "विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार मापनी" का प्रयोग किया गया है।

VI. शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधिया

प्रस्तुत शोध अध्ययन में एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया हैं –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. 'टी'– परीक्षण

VII. आंकड़ों का विश्लेषण

उद्देश्य 1. प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरुष शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H01. प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरुष शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1. प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरुष शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार का मध्यमान, मानक विचलन और 'टी' मान :

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता मात्रा (df)	टी–मान	टिप्पणी
महिला	196	177.64	20.377	398	0.592	0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।
पुरुष	204	176.50	18.054			

तालिका संख्या 1 यह प्रदर्शित करती हैं कि हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार के प्रति प्राथमिक स्तर के महिला शिक्षकों का माध्य 177.64 और पुरुष शिक्षकों का माध्य 176.50 है एवं महिला शिक्षकों का मानक विचलन 20.377 और पुरुष शिक्षकों का मानक विचलन 18.054 हैं इनका t-value ($t=0.592, p>.05$) के 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात प्राथमिक स्तर पर शिक्षण कार्य करने वाले महिला और पुरुष शिक्षकों की हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उद्देश्य 2. प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H02. प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 2. प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार का मध्यमान, मानक विचलन और 'टी'–मान :

क्षेत्र	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता मात्रा (df)	टी–मान	टिप्पणी

ग्रामीण	200	177.28	18.414	398	2.51	0.05 स्तर पर अंतर है।
शहरी	200	172.86	17.101			

तालिका संख्या 4.5 यह प्रदर्शित करती हैं कि हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार के प्रति प्राथमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों का माध्य 177.28 और शहरी विद्यालयों के शिक्षकों का माध्य 172.86 हैं एवं ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों का मानक विचलन 18.414 और शहरी विद्यालयों के शिक्षकों का मानक विचलन 17.101 हैं इनका t-value ($t=2.51, p<.05$) के 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं अर्थात प्राथमिक स्तर पर शिक्षण कार्य करने वाले ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षकों की हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार में सार्थक अंतर हैं।

VIII. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार से हैं :

1. प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरुष शिक्षकों का हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार एक समान पाया गया है।
2. प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण का शिक्षकों के हिन्दी विषयवस्तु शिक्षण व्यवहार शहरी शिक्षकों से अच्छा पाया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. झा एवं रस्तोगी (2018) ने *क्रिएटिव स्टाइल आफ टीचिंग आफ हिंदी मीडियम एंड इंग्लिश मीडियम स्कूल टीचर : अ कंपैरेटिव स्टडी,* इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एजुकेशन एण्ड रिसर्च, 4(5), 21–25.
2. वसन एवं पी.के. (2019) ने *टीचिंग कॉम्पीटेन्स एंड टीचिंग स्टाइल ऑफ प्रायमरी स्कूल टीचर,* इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एण्ड सोशल साइन्स, 3(2), 870–879.
3. शेख एवं अन्य (2019) ने *इंपैक्ट आफ डिफरेंट टीचिंग स्टाइल ऑन स्टूडेंट मोटिवेशन टूवर्ड्स इंग्लिश लैंग्वेज लर्निंग एट सेकेंडरी लेवल,* स्कालर्ली रिसर्च जर्नल ऑफ ह्युमिनिटटी साइसं एण्ड इंग्लिश लैग्वेज, 7(36), 9598–9603.
4. चटर्जी एवं अन्य (2020) ने *लिंकिंग टीचिंग स्टाइल एंड लर्निंग स्टाइल एज अ मेजर ऑफ पर्सनल एनवायरमेंट फिट टू असेस स्टूडेंट्स परफारमेंस* पीपुल्स, इण्टरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च इन एजूकेशन, 2(4), 48–51.
5. अवस्थी (2022) ने *अ स्टडी आफ नीड टू चेंज इन टीचिंग स्टाइल,* थवेरी एण्ड प्रक्टिस इन लैग्वेज स्टडीज, 6(4), 742–750.
6. पांडेय, डॉ. के. पी. (2019) नवीन शिक्षा मनोविज्ञान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पोस्ट बॉक्स नंबर 1149, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
7. गुप्ता, डॉ. एस. पी. (2015): उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
8. पांडेय, डॉ रामशकल (2012): उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
9. कुमार, डॉ. बृजेश (2022): अध्यापक शिक्षा के आयाम, बीएफसी पब्लिकेशन, लखनऊ उत्तर प्रदेश